७६वें स्वतन्त्रता दिवस की पूर्वसंध्या पर
भारतीय समाजविज्ञान परिषद् के अध्यक्ष का संदेश

१४ अगस्त २०२२

प्रिय सहयोगियो,

कल सवेरे हम स्वतंत्रता के ७५ वर्ष सम्पन्न कर भारत के अमृतकाल में प्रवेश कर रहे हैं। इस शुभ ऐतिहासिक अवसर पर आप सब को मेरी शुभकामनाएँ। यह हम सब के लिये एवं हमारे सनातन राष्ट्र के लिये अत्यंत गौरव एवं प्रसन्नता का दिवस है।

ऐसी शुभ जयंतियाँ प्रसन्नता के साथ-साथ आत्मविश्लेषण का अवसर भी प्रस्तुत करती हैं। इस अमृत महोत्सव पर प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव करते हुए, भारत के हम सब समाजविज्ञानियों को अपने अब तक के कार्यों का अवलोकन एवं समीक्षा भी करनी चाहिये। इन पचहत्तर वर्षों में हमारी क्या प्राप्तियाँ रही हैं और अमृतकाल के अगले पच्चीस वर्षों में हम क्या पाना चाहते हैं? परिषद् इस विषय पर एक व्याख्यान-शृंखला का आयोजन कर रही है। इन व्याख्यानों में राष्ट्रनिर्माण के विभिन्न क्षेत्रों के अग्रणी जन उनके अपने क्षेत्र में भारत पिछले ७५ वर्षों में कहाँ पहुँचा है और आगे कहाँ पहुँचने का संकल्प है, इस विषय पर विचार करते हैं। मैं अपने सब समाजविज्ञानी सहयोगियों से आग्रह करता हूँ कि वे भी अपनी, अपने विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र की एवं अपने-अपने संस्थानों की अब तक की उपलब्धियों का अवलोकन एवं भविष्य के संकल्पों का निश्चय करें।

इस संदर्भ में आप सबसे मैं एक विनम्र निवेदन करना चाहता हूँ। अमृतकाल के अगले पच्चीस वर्ष हम भारत के प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक जिले एवं हो सके तो प्रत्येक तालुक एवं गाँव के विशिष्ट भूगोल, इतिहास, संस्कृति का, वहाँ की विशिष्ट प्राकृतिक संपदाओं का एवं वहाँ के लोगों की विशिष्ट मान्यताओं, प्रतिबद्धताओं एवं अपेक्षाओं-आकांक्षाओं का गहन अध्ययन एवं बृहद् संकलन करने में लगायें। भारत के विभिन्न लोगों और उनके समाजों-समुदायों की विशिष्ट वृत्तियों, उपलब्धियों एवं आकाक्षाओं और उनके विशिष्ट इतिहास एवं कला-कौशल का भी वैसा ही बृहद् अध्ययन एवं संकलन हम करें। और भारत के विभिन्न लोगों एवं क्षेत्रों की विशिष्टताओं का अध्ययन करते हुए हम उन सब विशिष्टताओं को एक सूत्र में बांधने वाली भारतीय सभ्यता की विलक्षण अवधारणाओं, प्रतिबद्धताओं एवं व्यवस्थाओं पर भी विचार करें।

ब्रिटिश प्रशासकों ने जिला गेजेटीयरों के द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्टताओं का कुछ संकलन तो किया था। उन्होंने भारत के विभिन्न समाजों-समुदायों का नृविज्ञान की दृष्टि से विस्तृत अध्ययन भी किया था। उन ब्रिटिश अध्ययनों को आधार बना कर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने अपने *पीपुल ऑफ इण्डिया* परिकल्प के माध्यम से भारत के विभिन्न समुदायों के विषय में बहुत बड़ा संकलन किया है। वह परिकल्प कदाचित् स्वतंत्र भारत के समाजविज्ञानियों द्वारा संपन्न किया गया सबसे बृहद् प्रयास है।

मेरी आकांक्षा एवं आग्रह है कि हम अंग्रेजी काल के *जिला गेजेटीयर* एवं बाद के *पीपुल ऑफ इण्डिया* परिकल्प दोनों के प्रयासों को सम्मिलित करते हुए भारत के सब क्षेत्रों एवं सब लोगों की विशिष्ट संपदाओं, उपलब्धियों एवं आकांक्षाओं का संकलन करने का कार्य इस अमृतकाल में संपन्न करें। हम संकल्प लें कि जब भारत अपना १००वां स्वतन्त्रता दिवस मना रहा होगा, तब हम भारत के समाजविज्ञानी गर्व से कह सकेंगे कि हम अपने देश, अपनी भूमि एवं अपने लोगों को और उनकी समस्त विभिन्नताओं, विशेषताओं एवं संपदाओं को जानते हैं, समझते हैं, और हम अपने उस बृहद्-विस्तृत ज्ञान को भारत, भारतीय लोगों एवं भारतीय सभ्यता के अपनी गौरवमयी नियति तक पहुँचने के प्रयासों के प्रति समर्पित करते हैं।

महात्मा गांधी अपनी अद्भुत पुस्तक *हिंद स्वराज्य* के प्रायः अंत में कहते हैं – *खरी खुमारी तो उसे ही चढ़ती है जो ज्ञानपूर्वक मानता है कि हिंद की सभ्यता सर्वोपरि है…*

हम भारत के समाजविज्ञानी उस ज्ञान का सृजन करें जिससे भारत के लोगों में राष्ट्रनिर्माण की एवं स्वराज्य की प्राप्ति की वह खुमारी चढ़ पाये जिसका आवाहन महात्मा गांधी कर रहे थे।

जय हिन्द

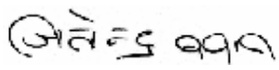

डॉ. जे. के बजाज
सदस्य, अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति

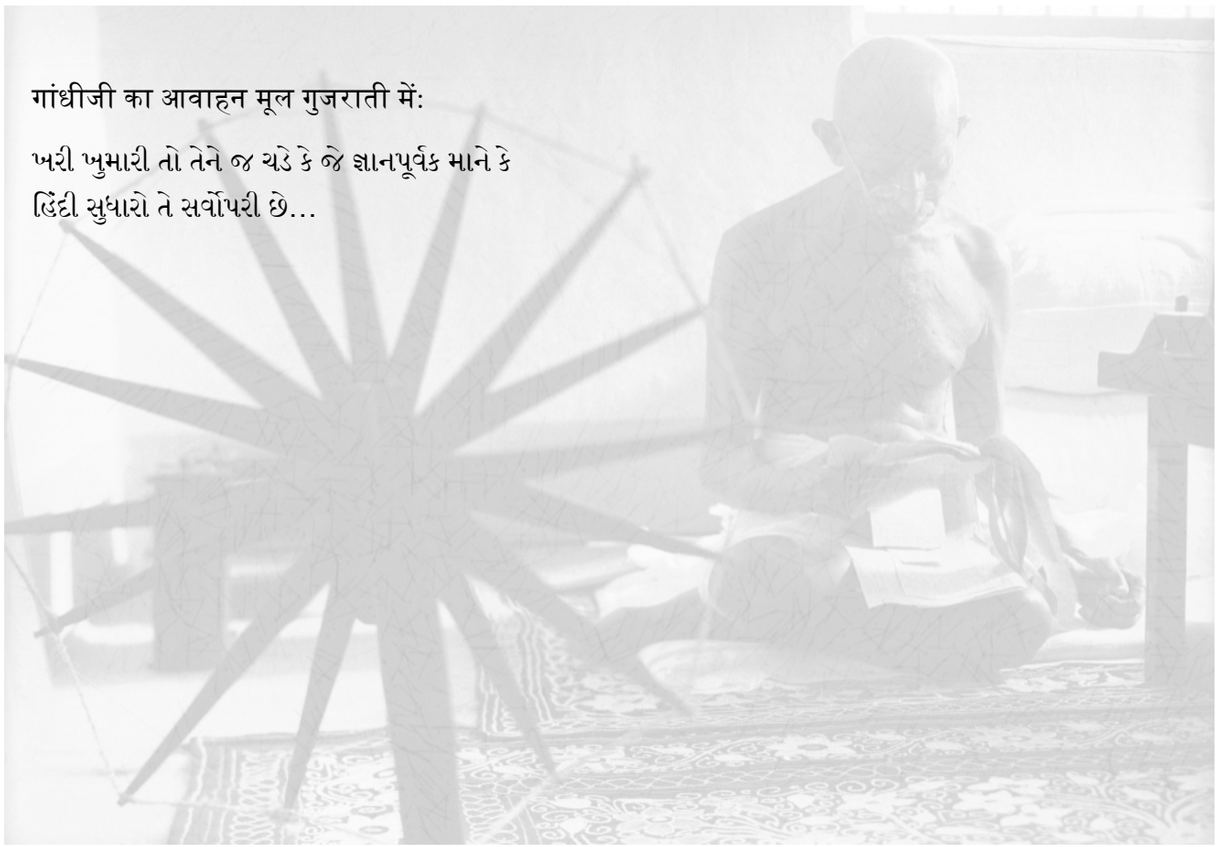

गांधीजी का आवाहन मूल गुजराती में:

ખરી ખુમારી તો તેને જ ચડે કે જે જ્ઞાનપૂર્વક માને કે
હિંદી સુધારો તે સર્વોપરી છે…